जेना घोषणा (एसडीजी के अच्छे कारणों को पुनर्जीवित करने के लिए), 18 मार्च 2021

जेना घोषणा

स्थिरता के लिए मानविकी और सामाजिक विज्ञान
वैश्विक स्थिरता के सांस्कृतिक और क्षेत्रीय आयाम

सारांश

मानवता, व्यापक रूप से सहमत सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को समय पर प्राप्त करने का अंतिम अवसर चूकने के बहुत करीब है। यह अंतर्दृष्टि अधिकांश विशेषज्ञों द्वारा साझा की जाती है। उपर से नीचे का कार्यान्वयन दृष्टिकोण के कारण बाधाएं आती हैं । आवश्यक सामाजिक परिवर्तनों की गति और समझ को बढ़ाने के लिए परिवर्तन के प्रमुख प्रतिनिधियों तक पहुँचना आवश्यक है। ये आम नागरिक ही रोज़मर्रा के जीवन मे अपने कार्कलापों से अग्रणी भूमिका निभाते हैं । उन तक पहुंचने के लिए सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधताओं का सम्मान करना होगा। इस संदर्भ में, वैश्विक स्थिरता की दिशा में सांस्कृतिक और क्षेत्रीय रूप से विभेदित मार्गों का रचना और कार्यान्वयन मानविकी, सामाजिक विज्ञान और कलाओं के एक मजबूत जुड़ाव की मांग करता है।

.....

हम सभी, इस सम्मेलन "सस्टेनेबिलिटी के लिए मानविकी और सामाजिक विज्ञान" (अक्टूबर 21-22, 2020) के प्रतिभागियों ने माना है कि दुनिया व्यापक रूप से सहमत सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के अंतिम अवसर के बहुत करीब है। इस सम्मेलन को यूनेस्को के लिए कनाडा और जर्मन आयोगों के साथ साझेदारी में आयोजित, दर्शनशास्त्र और मानव विज्ञान के लिए अंतर्राष्ट्रीय परिषद, सामाजिक विज्ञान और कनाडा की मानविकी अनुसंधान परिषद, विश्व कला और विज्ञान अकादमी, रोम का क्लब, अकादमिक यूरोपिया, और अंतर्राष्ट्रीय भौगोलिक संघ द्वारा अयोजित किया गया ।

घोषित किया गया कि:

1. सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में प्रगति में तेजी लाने और संयुक्त राष्ट्र के "कार्यान्वयन दशक" को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए, स्थिरता के बारे में बात करने से लेकर स्थायी रूप से जीने की ओर एक और कदम की आवश्यकता है। इस तरह के बदलाव विशेष रूप से उन लोगों की रोजमर्रा की आवश्यकताओं व उनके प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित होनी चाहिए। इसमें वो विकासशील नीतियां शामिल हैं जो लोगों की दैनिक जरूरतों तथा उनकी गतिविधियों में आमूल-चूल परिवर्तन को सक्षम, बढ़ावा और समर्थन देती हैं।

2. सतत विकास की कई नीतियां मानव-प्रकृति द्विभाजन से उपजी हैं और प्रकृति को मानवता के आसपास के वातावरण के रूप में समझती हैं। फिर भी हमारे शरीर के साथ हम स्वयं प्रकृति का एक अभिन्न अंग हैं, और हम जो कर रहे हैं उसके आधार पर हम इसे विशिष्ट तरीकों से अपनी प्रथाओं में शामिल करते हैं। यह परिप्रेक्ष्य प्रकृति-समाज विरोध से हटकर समाज-प्रकृति अन्योन्याश्रित संबंध में बदल जाता है।

3. वर्तमान संकटों में से अधिकांश अपनी जड़ें अनपेक्षित, अक्सर निकट, मानव कार्यों के समस्याग्रस्त परिणामों में पाते हैं, जो अंततः वैश्विक महत्व के होते हैं।यह मुख्य रूप से एक सामाजिक के रूप में संकट फ्रेम के

बजाय विशुद्ध रूप से एक पर्यावरण के मुद्दे की जरूरत है, और विस्तार क्या अपने ज्ञान का आधार समझा जाता है ।

4. जीवन के दीर्घकालिक स्थायी तरीकों की स्थापना के लिए परिवर्तन के प्रमुख चालकों के रूप में रोजमर्रा की प्रथाओं को पहचानने की आवश्यकता है। यह उन प्रथाओं की सांस्कृतिक, सामाजिक और क्षेत्रीय विविधता के साथ-साथ अनुकूलन के पिछले अनुभवों का सम्मान करने का आह्वान करता है। इस संदर्भ में, सामाजिक विज्ञान और मानविकी को स्थिरता नीतियों को आकार देने में केंद्रीय भूमिका निभानी चाहिए।

5. स्थायी रूप से जीने की दिशा में परिवर्तन को व्यापक रूप से स्वीकार किया जाएगा यदि वे अकादमिक विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों के साथ मिलकर काम करने वाले सभी स्तरों पर रोजमर्रा के लोगों, विशिष्ट हितधारकों और नीति-निर्माताओं द्वारा सह-विकसित किए गए हों। इसका मतलब है कि "एक माप सभी फिट बैठता है" टॉप-डाउन रणनीतियों को लागू करने और विशेष रूप से अनुरूप दृष्टिकोणों की ओर एक प्रति एक बदलाव।

6. दैनिक प्रथाओं के सांस्कृतिक, सामाजिक और प्राकृतिक आयाम सभी स्वाभाविक रूप से जुड़े हुए हैं, स्थानीय रूप से अंतर्निहित हैं, और विशिष्ट तरीकों से विश्व स्तर पर परस्पर जुड़े हुए हैं। इस अंतर्दृष्टि के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है जो प्रत्येक अनुशासन के निष्कर्षों से लाभान्वित होते हुए अनुशासनात्मक साइलो से आगे निकल जाती है।

7. वास्तविक अंतःविषय अनुसंधान को एक सुलभ रूप में जानकारी और अंतर्दृष्टि प्रदान करनी चाहिए, और सहभागी ज्ञान उत्पादन की सुविधा प्रदान करनी चाहिए। इसके लिए प्रासंगिक समुदायों के बीच बॉटम-अप आंदोलनों का समर्थन करने की आवश्यकता है, जिससे उन्हें प्रभावी योगदान देने और कार्रवाई करने की अनुमति मिल सके।

8. नई पीढ़ियों में एक गहरे सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता है कि युवा लोग शुरू से ही इस बदलाव में विशेष रूप से मजबूती से शामिल हों। यह मांग करता है कि उनके पास मजबूत जानकारी और शिक्षा, नागरिक भागीदारी, साथ ही साथ राजनीतिक भागीदारी तक पहुंच हो।

9. स्थायी रूप से जीने के सांस्कृतिक और क्षेत्रीय रूप से विविध तरीकों को स्थापित करने के लिए रचनात्मकता और एक नए संदर्भ की आवश्यक है। हम चीजों को कैसे करते हैं, इस पर बहुत कुछ निर्भर करता है कि वे हमारे लिए क्या संकेत देते हैं, हम दुनिया को कैसे देखते हैं और इसमें हमारा स्थान क्या है। मानविकी और सामाजिक विज्ञान के साथ कला अपने सभी रूपों में मानसिकता के विस्तार के लिए महत्वपूर्ण हैं, जीवन जीने के तरीकों पर नए दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। यह मानव जाति को निष्कर्षण के युग से पुनर्जनन की संस्कृतियों की ओर बढ़ने, एसडीजी तक बढ़ी हुई गति और गहराई तक पहुंचने और मापने योग्य सफलता सुनिश्चित करने की अनुमति देगा।

10. इसके लिए, हम फंडिंग एजेंसियों सहित सभी प्रासंगिक राजनीतिक और वैज्ञानिक संस्थानों का आह्वान करते हैं कि वे संयुक्त राष्ट्र के "कार्रवाई के दशक" का उपयोग एक समय के रूप में करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सांस्कृतिक आयाम स्थिरता कार्यक्रमों के मूल में है। इसमें शामिल है:

- एक पर्यावरणीय मुद्दे से एक सामाजिक चुनौती के लिए बुनियादी परिप्रेक्ष्य को फिर से परिभाषित करें
- अधिक समावेशी, क्षेत्रीय रूप से विभेदित समस्या-निवारक बॉटम-अप दृष्टिकोण के साथ पूरक समाधान उन्मुख टॉप-डाउन रणनीतियाँ
- निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में युवा पीढ़ी की भागीदारी को बढ़ावा देना
- सुधार स्थिरता अनुसंधान, इसके वित्त पोषण और संगठन
- अनुसंधान के सभी क्षेत्रों में अंतःविषय सहयोग को मजबूत बनाना
- वैश्विक सामाजिक आपात स्थितियों और उनकी महारत पर ध्यान केंद्रित करते हुए सभी शैक्षणिक संस्थानों के पाठ्यक्रम में सुधार करें
- सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रामाणिक उदाहरण के रूप में विश्वविद्यालयों, अनुसंधान और शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करें

- कला, साथ ही मानविकी और सामाजिक विज्ञान के निष्कर्षों को भविष्य के सह-डिजाइन, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय रूप से विविध "स्थायी रूप से जीने के तरीके" में एकीकृत करें।

जेना, 18 मार्च, 2021

……

सम्मेलन के हस्ताक्षर करने वाले प्रतिभागी हैं ----------

कार्लोस अल्वारेज़-परेरा : रोम के क्लब के कार्यकारी समिति के सदस्य
हॉवर्ड ब्लूमेंथल: किड्स ऑन अर्थ के संस्थापक और रीइन्वेंटिंग स्कूल, पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय के संस्थापक
डॉ जॉन क्रॉवली: सामाजिक और मानव विज्ञान के लिए यूनेस्को क्षेत्र में अनुसंधान, नीति और दूरदर्शिता अनुभाग के प्रमुख
डॉ मैथ्यू डेनिस: अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान परिषद (आईएससी) के विज्ञान निदेशक
प्रो. टियागो डी ओलिवेरा पिंटो: ट्रांसकल्चरल म्यूजिक स्टडीज पर यूनेस्को चेयर, यूनिवर्सिटी ऑफ म्यूजिक फ्रांज लिज़ेट वीमर, एकेडेमिया यूरोपिया के सदस्य
प्रो. फडवा एल गिंडी: विश्व कला और विज्ञान अकादमी, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स के ट्रस्टी (सेवानिवृत्त)
गैरी जैकब्स: अध्यक्ष और सीईओ, वर्ल्ड एकेडमी ऑफ आर्ट एंड साइंस
डॉ जोआन कॉफ़मैन: स्वतंत्र विशेषज्ञ, स्थिरता विज्ञान, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) (सेवानिवृत्त)
प्रो मेलिसा लीच: निदेशक, विकास अध्ययन संस्थान (आईडीएस), ससेक्स विश्वविद्यालय, अकादमिक यूरोपिया के सदस्य
प्रो. मार्टिन लीनर: सह-संस्थापक और अंतर्राष्ट्रीय सुलह अध्ययन संघ के निदेशक, फ्रेडरिक शिलर विश्वविद्यालय जेना
डॉ लुत्ज़ मोलर: उप महासचिव, यूनेस्को जर्मन आयोग
प्रो. लुइज़ ओस्टरबीक: इंटरनेशनल काउंसिल फॉर फिलॉसफी एंड ह्यूमन साइंसेज (सीआईपीएसएच) के अध्यक्ष, मानविकी और सांस्कृतिक भूमि-स्केप प्रबंधन पर यूनेस्को चेयर, इंस्टिट्यूट पॉलिटेक्निको डी तोमर
डॉ. मम्फेला रामफेल: द क्लब ऑफ रोम के सह-अध्यक्ष और रीमागिन एसए के सह-संस्थापक
प्रो. थॉमस रॉयटर: कार्यकारी सदस्य और ट्रस्टी, विश्व कला और विज्ञान अकादमी और एकेडेमिया यूरोपिया के सदस्य, प्रोफेशनल फेलो, मेलबर्न विश्वविद्यालय
प्रो हर्टमुट रोजा: निदेशक, मैक्स वेबर सेंटर फॉर एडवांस्ड कल्चरल एंड सोशल स्टडीज, एरफर्ट विश्वविद्यालय, फ्रेडरिक शिलर यूनिवर्सिटी जेना, एकेडेमिया यूरोपिया के सदस्य
प्रो. पॉल श्रीवास्तव: निदेशक, सस्टेनेबिलिटी इंस्टीट्यूट और मुख्य स्थिरता अधिकारी, पेनसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी, द क्लब ऑफ़ रोम के सदस्य
ब्रैंको स्मोन: संकल्पनात्मक कलाकार
डॉ ऐनी स्निक: स्टीम में ट्रांसडिसिप्लिनरी एजुकेशन, केयू यूनिवर्सिटी ल्यूवेन, द क्लब ऑफ रोम-ईयू, वर्ल्ड एकेडमी ऑफ आर्ट एंड साइंस के फेलो
डॉ लुसिला स्पिनी: सतत विकास के लिए स्वतंत्र विशेषज्ञ
प्रो. सैंडर वैन डेर लेउव, निदेशक, एएसयू-एसएफआई सेंटर फॉर बायोसोशल कॉम्प्लेक्स सिस्टम्स, एरिज़ोना स्टेट यूनिवर्सिटी
प्रो. लिट्रे वासेउर: अध्यक्ष, कनाडा के यूनेस्को आयोग, सामुदायिक स्थिरता पर यूनेस्को के अध्यक्ष: स्थानीय से वैश्विक तक, ब्रॉक विश्वविद्यालय, सेंट कैथरीन, ओंटारियो
प्रो बेनो वेरलेन, स्थिरता के लिए वैश्विक समझ पर यूनेस्को अध्यक्ष, फ्रेडरिक शिलर विश्वविद्यालय जेना, विश्व कला और विज्ञान अकादमी के फेलो, अकादमिक यूरोपिया के सदस्य
प्रो टिलो वेश, कार्ल वॉन ओस्सिएत्स्की विश्वविद्यालय, ओल्डेनबर्ग

***Contact & Correspondence*:**

Prof. Dr. Benno Werlen
Member of the Academia Europaea
Fellow of the World Academy of Art and Sciences &
The Max Weber Center for Cultural and Social Studies
UNESCO Chair on Global Understanding for Sustainability
Institute of Geography, Friedrich Schiller University Jena, Germany
+49-3641 948840. Email: benno.werlen@gmail.com